शबे तार

यानी

अँधेरी रात

लेखक

मॉरिस मैटरलिंक

अनुवादक

प्रेमचंद

हंस प्रकाशन

इलाहाबाद

प्रकाशक
हंस प्रकाशन इलाहाबाद

मुद्रक
माधव प्रेस इलाहाबाद

आवरण
कृष्ण चंद्र श्रीवास्तव

मूल्य
डेढ़ रुपया

दो शब्द

प्रस्तुत नाटक सितम्बर-अक्तूबर १९१९ के 'ज़माना' में निकला था।

इस सम्बन्ध में मुंशी प्रेमचंद का ५ सितम्बर का यह पत्र, जो उन्होंने 'ज़माना' के सम्पादक को लिखा था, द्रष्टव्य है—

"'शबे तार' का बक़िया हिस्सा रवाना करता हूँ। मैटरलिंक का एक ड्रामा Sightless नाम का है। Scott Library के सिलसिले में मिलेगा। उसमें एक ड्रामा और भी है। उसका नाम Pelleas and Melisanda है। मैं उसे हिन्दी में तर्जुमा कर रहा हूँ। ये किताबें मुझे बहुत पसन्द हैं। यह ड्रामा ख़त्म हो जाये तो आपके पास भेज दूँ। मैंने हरचन्द कोशिश की कि इस Allegory को सुलझाऊँ लेकिन पूरी कामयाबी नहीं हुई। 'शबे तार' का हिन्दी एडीशन मय दीबाचे के शाया हो रहा है लेकिन वह दीबाचा कुछ मौतमोल है।"

'शबे तार' का हिन्दी एडीशन कहीं देखने में नहीं आया। पता नहीं छपा भी या सिर्फ़ बात होकर रह गयी। पुस्तक रूप में तो शायद वह उर्दू में भी नहीं निकला।

Pelleas and Melisanda का अनुवाद उर्दू या हिन्दी किसी भाषा में अब तक प्राप्त नहीं हो सका, न 'ज़माना' में न किसी दूसरे उर्दू या हिन्दी पत्र में और न पुस्तकाकार।

'शबे तार' ज्यों का त्यों अपने उर्दू रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है — हाँ, कठिन शब्दों का अर्थ फ़ुटनोट में दे दिया गया है।

अमृतराय

लेखक परिचय

मैटरलिंक बेल्जियम का ज़िन्दा-जावेद[1] ड्रामेटिस्ट, शायर और ...निगार[2] नोबेल प्राइज़ का इफ़्तख़ार[3] हासिल कर चुका है। ...ड्रामों में तसव्वुफ़[4] का रंग ग़ालिब है, लेकिन वह तसव्वुफ़ नहीं जो ...-ओ-तराब[5] जिस्म-ओ-फ़रहत[6] और हिज्र-ओ-विसाल[7] के तज़्किरे[8] ...रह रहता है, बल्कि वह तसव्वुफ़ को कहानी बनाने,[9] मारिफ़ात ...[10] हयात[11]-ओ-ममात[12] के असरार,[13] ज़हूर[14] और मज़ाहिरात[15] का ...तत[16] और मुफ़स्सिर[17] है। वह अक्सर ऐसी रूहानी बलंदियों पर पहुँचता है जहाँ आम शोअरा[18] के तायरे-परवाज़[19] के पर जलते हैं। वह महज़ समाई[20] बातें नहीं लिखता, उसको निगाहे-बातिन[21] ...है। उसने रूहानी मुशाहिदात[22] लिखे हैं और इस रंग में योरप ...का सानी[23] नहीं रखता।

प्रेमचंद

---

1 अमर 2 चित्रकार 3 गौरव 4 ब्रह्मज्ञान 5 [illegible] और [illegible] 6 [illegible] 7 [illegible] [illegible] 8 [illegible] 9 [illegible] 10 [illegible] के [illegible] 11 [illegible] 12 [illegible] 13 [illegible] 14 [illegible] 15 [illegible] 16 [illegible] 17 [illegible] 18 [illegible] 19 [illegible] 20 [illegible] 21 भीतर की आँख, ज्ञान-चक्षु 22 [illegible] 23 बराबर

शबे तार
यानी
अँधेरी रात

(मंज़र[1] — एक बहुत पुराना ख़ित्तए-शुमाली[2] का जंगल जिससे अबदियत[3] के आसार[4] नुमायाँ[5] हैं। आसमान तारों से पुर[6]। जंगल के वस्त[7] में, आधी रात के क़रीब एक बूढ़ा दरवेश[8] स्याह लबादा ओढ़े बैठा हुआ है। उसका सर और जिस्म का बालाई[9] हिस्सा जो किसी क़दर पीछे को झुका हुआ और बिल्कुल बेहिस-ओ-हरकत[10] है एक शाहबलूत के दरख़्त से टिका हुआ है। यह दरख़्त बड़ा खोखला और छतनार है। उसका चेहरा बिल्कुल ज़र्द है। उस पर ख़ाक की-सी ज़र्दी छायी हुई है और उसके नीले होंठ खुले हुए हैं। उसकी साकित[11] और पथरायी हुई आँखें मंज़र[12] के दूसरे जानिब[13] की तरफ़ नहीं देखतीं और ग़महाए-देरीना[14] से ख़ूनीं[15] मालूम हो रही हैं। उसके सफ़ेद[16] और लम्बे बाल उसके चेहरे पर बिखरे हुए हैं जो इस वहशतनाक तारीकी[17] का तमाम चीज़ों से ज़्यादा मुज़महिल[18] और रोशन है। उसके निहायत लागर हाथ उसके सीने पर बँधे हुए पड़े हैं। उसके दाहिने जानिब छः बूढ़े और अंधे आदमी चट्टानों, सूखी पत्तियों और दरख़्तों के ठूँठों पर बैठे हुए हैं। बायीं तरफ़ उनके मुक़ाबिल छः बूढ़ी अंधी औरतें बैठी हुई हैं। दर्मियान में एक गिरा हुआ दरख़्त और पत्थर के टुकड़े हायल हैं। तीन अंधी औरतें एक ग़ैर-मुसलसल[19] आवाज़ से दुआ कर रही हैं और रो रही हैं। एक औरत निहायत ज़ईफ़-सिन[1] है। पाँचवीं औरत गूँगी और पगली है। उसकी गोद में एक छोटा-सा लड़का सो रहा है। छठी औरत अभी नौजवान है और उसके लंबे-लंबे बालों से उसका सारा जिस्म ढँका हुआ है। मर्द और औरतें सब के सब एक ही क़िस्म के स्याह और

१ दृश्य २ उत्तरी प्रदेश ३ शाश्वतता ४ लक्षण ५ स्पष्ट ६ भरा हुआ ७ मध्य ८ संन्यासी ९ ऊपरी १० निश्चल निष्क्रिय ११ स्थिर १२ [illegible] १३ [illegible] १४ [illegible] १५ [illegible] १६ [illegible] १७ [illegible] १८ [illegible] १९ [illegible] १ [illegible] १ बहुत बूढ़ी

ढीले ढाले कपड़े पहने हुए हैं। उनमें से अक्सर कुहनियाँ घुटनों पर रखे हुए और चेहरों को हाथों से छिपाये हुए चुपके इंतजार बैठे हैं। ऐसा मालूम होता है कि वह इशारे और संकेत की आदत को भूल गये हैं। वह इस जजीरे के पैहम[1] शोरो-गुल पर जरा भी सर नहीं हिलाते। बड़े-बड़े मातमी दरख्त यव-जिस्म[2] देवदार व शबूत व सनोबर उन्हें अपने तारीक[3] और वफ़ादार साये में छिपाये हुए हैं। नाबू से थोड़ी दूर पर लंबे-लंबे जर्द नर्गिसों के फूल खिले हुए हैं। बावजूदे कि अभी चाँद की किरनें पत्तियों से छन-छनकर जमीन पर आती हैं और तारीकी[4] को हटाने की कोशिश करती हैं, फिर भी जंगल में गमीक[5] तारीकी छायी हुई है।)

पहला नाबीना[6]

क्या वह अभी नहीं आ रहे हैं?

दूसरा नाबीना

तुमने मुझे जगा दिया।

पहला नाबीना

मैं भी सो गया था।

तीसरा नाबीना

मैं भी सोता ही था।

१ लगातार २ पेड़ ३ अंधकारपूर्ण ४ अंधकार ५ गहरा ६ अंधा आदमी

पहला नाबीना

क्या वह अभी नहीं आ रहे हैं ?

दूसरा नाबीना

मुझे किसी के आने की आहट नहीं मिलती ।

तीसरा नाबीना

अब खानकाह[1] में लौट जाने का वक्त करीब होगा ।

पहला नाबीना

हम यह जानना चाहते हैं कि हम कहाँ हैं ?

सबसे बुड्ढा नाबीना

कोई जानता है कि हम कहाँ हैं ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

हम बहुत देर तक चलते रहे थे । हम जरूर खानकाह से बहुत फासले पर हैं ।

पहला अंधा आदमी

ओ हो क्या औरतें हमारे मुकाबिल हैं ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

हाँ हम तुम्हारे सामने बैठी हुई हैं ।

पहला अंधा आदमी

ठहरो, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ । (वह उठकर इधर-उधर टटोलता है ।) तुम कहाँ हो ? बोलो ताकि मुझे आवाज से कुछ पता चले ।

---

१ मठ या आश्रम

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

हम यहाँ पत्थरों पर बैठी हुई हैं।

पहला नाबीना

(वह आगे बढ़ता है और गिरे हुए दरख्तों और चट्टानों से ठोकर खाता है।) हमारे दर्मियान कुछ हायसर है।

दूसरा नाबीना

वहाँ बैठे हो वहीं बैठे रहो। यह बेहतर है।

तीसरा नाबीना

तुम कहाँ बैठे हो ? क्या हमारे पास आना चाहते हो ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

हम खड़ी नहीं हो सकतीं।

तीसरा नाबीना

इन्होंने हम लोगों को अलग अलग क्यों कर दिया ?

पहला नाबीना

मुझे औरतों की तरफ़ से दुआ करने की आवाज़ आ रही है।

दूसरा नाबीना

हाँ तीनों बुड्ढी अंधी औरतें दुआ कर रही हैं।

पहला नाबीना

लेकिन यह तो दुआ करने का वक्त नहीं है।

दूसरा नाबीना

तुम लोग बावर्चीखाने में जाकर नमाज़ पढ़ना।

---
१ बावर्ची खाना

(तीनों औरतें बदस्तूर दुआ करती रहती हैं।)

तीसरा नाबीना

मैं यह मालूम करना चाहता हूँ कि मैं किसके क़रीबतर बैठा हुआ हूँ।

दूसरा नाबीना

शायद मैं तुमसे क़रीब हूँ।

तीसरा नाबीना

हम एक दूसरे से मिल नहीं सकते।

पहला नाबीना

लेकिन हमारे दर्मियान ज़्यादा फ़ासला नहीं है (वह इधर-उधर हाथों से टटोलता है। उसकी छड़ी से पाँचवें अंधे को चोट लग जाती है और वह कराह उठता है।) बहुत हमारे क़रीब बैठा हुआ है।

दूसरा नाबीना

मुझे सब आदमियों की आवाज़ें नहीं सुनायी देतीं। हम कुल छ आदमी थे।

पहला नाबीना

मुझे अब कुछ-कुछ हक़ीक़त सूझने लगी है। औरतों से भी पूछ लेना चाहिए। यह ज़रूरी है कि हम सूरते-हाल[1] से वाक़िफ़[2] हो जायें। अभी तक तीनों औरतों की दुआख्वानी[3] की आवाज़ मेरे कान में आ रही है। क्या वह एक ही जगह बैठे हुए हैं?

१ स्थिति २ परिचित ३ प्रार्थना करने

कहाँ गये ? उन्हें कोई मजाज़ नहीं है कि हमको तनहा छोड़ जायें।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी

वह बहुत दूर गये हैं, शायद औरतों से इसका ज़िक्र किया था।

पहला नाबीना

तो अब वह औरतों ही से बोलते हैं ? गोया हम सब के सब मर गये। फिर आख़िर हमें उनकी शिकायत करनी पड़ेगी।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी

किस से शिकायत करोगे ?

पहला नाबीना

अभी यह नहीं मालूम है। ख़ैर, देखा जायगा। लेकिन वह गये कहाँ ? मैं औरतों से पूछ रहा हूँ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

वह इतनी दूर आते-आते थक गये थे। मुझे ख़याल आता है कि वह ज़रा देर तक हमारे दर्मियान बैठे थे। कई दिनों से वह बहुत दिलगिरफ़्ता[1] और अलील[2] हैं। जब से डाक्टर का इंतक़ाल हुआ उनकी तबीयत परेशान है। वह उदास रहते हैं। शाज़[3] ही किसी से बोलते हैं। कुछ ख़बर नहीं कि क्या सानिहा[4] हो गया है। आज वह सैर करने पर मुसिर[5] हुए। वह कहते थे कि मैं सरमा[6] शुरू होने के पहले आख़िरी बार धूप में जज़ीरे[7] को देखना चाहता हूँ। ऐसा मालूम होता कि सरमा बहुत सर्द और तूफ़ानी होगा। अभी से शुमाल[8] की जानिब से बर्फ़

१ उद्विग्न २ अस्वस्थ ३ विरले ४ दुर्घटना ५ आमादा ६ जाड़ा ७ द्वीप ८ उत्तर

जाने लगी है। वह कुछ मुतरद्दिद[1] भी थे। लोग कहते हैं कि पिछले दिनों के तूफ़ानों से नदियों में सैलाब[2] आ गया है और पुल[3] मुनहदिम[4] होते जाते हैं। वह यह भी कहते थे कि मुझे समुंदर से ख़ौफ़ मालूम होता है। यह किला जगह मुतलातिम[5] हो रहा है और जज़ीरे की पहाड़ियाँ काफ़ी तौर पर ऊँची नहीं हैं। वह खुद अपनी आँखों से देखना चाहते थे लेकिन उन्होंने हमसे कुछ नहीं बतलाया कि क्या देखा। मुझे ख़याल आता है कि वह अपनी औरत के लिए रोटी और पानी लाने गये हैं। वह कहते थे कि शायद मुझे दूर जाना पड़े। हमको मजबूरन इंतज़ार करना पड़ेगा।

नौजवान अंधी औरत

जाते वक़्त उन्होंने मेरे हाथ पकड़े थे। उनके हाथ काँप रहे थे। गोया वह डर रहे हों। तब उन्होंने मेरा बोसा लिया।

पहला माबीना

अच्छा!

नौजवान अंधी औरत

मैंने उनसे पूछा कि क्या बात हो गया है। उन्होंने कहा मुझे नहीं मालूम कि क्या होनेवाला है। वह कहते थे कि मुल्कों की हुकूमत अब ख़त्म होनेवाला है। ग़ालिबन

पहला माबीना

इससे उनकी क्या मंशा थी?

[illegible]

मौजवान अंधी औरत

मैंने भी उनका मतलब न समझा। उन्होंने मुझसे यही बताया कि मैं उस बड़े रोशनी के मीनार की तरफ़ जा रहा हूँ।

पहला नाबीना

क्या यहाँ कोई रोशनी का मीनार भी है?

मौजवान अंधी औरत

हाँ जज़ीरे के शुमाल में है। मेरा ख़याल है कि हम उससे बहुत दूर नहीं हैं। वह मुझसे कहते थे कि मुझे मीनार की रोशनी यहाँ की पत्तियों पर पड़ती हुई नज़र आती है। मुझे आज के से अफ़सुर्दा-ख़ातिर[1] वह कभी न मालूम हुए थे और मेरा ख़याल है कि वह कई दिन से रोया करते थे। मालूम नहीं क्यों! मैं ख़ुद भी रोयी। मैंने उन्हें जाते हुए नहीं सुना। इससे ज़्यादा मैं उनसे और कुछ न पूछ सकी। मैं सुन रही थी कि वह बहुत संजीदगी से मुस्करा रहे थे। मैंने यह भी सुना कि वह आँखें बंद कर रहे थे और ख़ामोश रहना चाहते थे।

पहला नाबीना

उन्होंने यह सब बातें हमसे नहीं कहीं।

मौजवान अंधी औरत

तुम उनकी बातें कब सुनते थे।

सबसे बुड्ढा अंधी औरत

जब वह बोलते हैं तो तुम सब के सब कानाफुसकी करन

---

१ उदास

लगती हो ।

दूसरा नाबीना

अपने वक्त उन्होंने सिर्फ अस्सलाम कहा ।

तीसरा नाबीना

रात ज्यादा आ गयी ।

पहला नाबीना

अक्सर वक्त उन्होंने दो-तीन बार 'अस्सलाम' कहा गोया सोने जा रहे हों । जब वह सलाम कर रहे थे तो मुझे ऐसा मालूम होता था कि वह मेरी तरफ ताक रहे हैं । जब कोई किसी चीज की तरफ गौर से देखता है तो उसकी आवाज तब्दील हो जाती है ।

पाँचवाँ नाबीना

उन लोगों पर रहम करो जिनके आँखें नहीं हैं ।

पहला नाबीना

यह कौन वाहियात बातें कर रहा है !

दूसरा नाबीना

शायद यह वो है जो सुन नहीं सकता ।

पहला नाबीना

चुप रहो, यह रोने का वक्त नहीं है ।

तीसरा नाबीना

महात्मा जी रोटी और पानी लेने कहाँ चले गये ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

वह समुंदर की तरफ़ गये।

तीसरा नाबीना

इस सिन-ओ-साल पर कोई इस तरह समुंदर की तरफ़ नहीं जाता।

दूसरा नाबीना

क्या हम समुंदर के क़रीब हैं ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

हाँ, एक लमहा ख़ामोश हो जाओ, तुम्हें उसकी आवाज़ सुनायी देगी।

(क़रीब से समुंदर की धीमी-धीमी सदा)

दूसरा नाबीना

मुझे तो सिर्फ़ तीनों औरतों के दुआ करने की आवाज आ रही है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

ग़ौर से सुनो। उनकी दुआओं के बीच-बीच में तुम्हें उसकी आवाज़ सुनायी देगी।

दूसरा नाबीना

हाँ, मुझे कोई ऐसी आवाज सुनायी देती है जो हमसे दूर नहीं है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

वह सोयी हुई थी ऐसा मालूम होता है कि अब जाग रही है।

पहला नाबीना

महात्मा जी को हम यहाँ न लाना चाहिए था। मुझे इस ओर से अंदेशा होता है।

सबसे बुड्ढा आदमी

तुम खूब जानते हो कि जज़ीरा बहुत बड़ा नहीं है और ज्योंही ख़ानक़ाह से बाहर निकलो यह सदा आने लगती है।

दूसरा नाबीना

मैंने कभी इसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

तीसरा नाबीना

मुझे ऐसा मालूम होता है कि आज यह बहुत क़रीब हो गयी है। मैं इसे इतने पास से नहीं सुनना चाहता।

दूसरा नाबीना

मुझे भी यह पसंद नहीं। फिर हमने ख़ानक़ाह से बाहर आने के लिए कभी नहीं कहा।

तीसरा नाबीना

हम इतनी दूर कभी यहाँ नहीं आये। हमें इतनी दूर लाने में क्या फ़ायदा?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

आज सुबह मौसम बहुत सुहाना था। वह चाहते थे कि हम गर्मी के आख़िरी दिनों का सुख उठायें इससे पहले कि जाड़े भर के लिए ख़ानक़ाह में बंद[1] हो जाय।

---

१ [illegible]

पहला मावोना

लेकिन मुझे खानक़ाह में पड़े रहना ज्यादा पसंद है ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

वह कहते थे कि हम जिस जज़ीरे में रहते हैं उसका कुछ हाल ज़रूर जानना चाहिए । उन्होंने खुद भी पूरा जज़ीरा नहीं देखा है । यहाँ एक ऐसा पहाड़ है जिस पर कोई नहीं चढ़ सका, ऐसी वादियाँ हैं जहाँ कोई नहीं जाना पसंद करता, और ऐसे ग़ार हैं जिनमें आज तक कोई दाख़िल नहीं हो सका । अलग़रज़ उनका मंशा था कि हम लोगों को आफ़ताब[1] के इंतज़ार में हमेशा खानक़ाह के ज़ेरे-साया[2] बैठे रहना मुनासिब नहीं । इसलिए वह हमको साहिल तक लाना चाहते थे । वह वहाँ तनहा गये हैं ।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी

उनका कहना सही है । हमको ज़िंदगी का ख़याल रखना चाहिए ।

पहला मावोना

लेकिन यहाँ मैदान में देखने के क़ाबिल कोई चीज़ नहीं है ।

दूसरा मावोना

क्या हम इस वक़्त धूप में हैं ?

तीसरा मावोना

क्या आफ़ताब अभी तक निकला हुआ है ?

छठवाँ मावोना

मेरा ख़याल है कि अब नहीं है । मालूम होता है कि रात ज़्यादा गयी ।

---

१ सूरज २ छाया में

दूसरा नाबीना

क्या पत्ते हैं ?

और सबके सब

कोई नहीं जानता ।

दूसरा अंधा

क्या अभी तक गमानी है ? (छठवें नाबीना से) तुम कहाँ हो ? हमें तो कुछ-कुछ सुझायी देता है । यहाँ आओ ।

छठवाँ नाबीना

मेरे ध्यान में इस वक्त खूब अंधेरा है । जब धूप होती है तो मुझे पलकों के नीचे एक नीली लकीर-सी नज़र आती है । बहुत अर्सा गुज़रा मैंने ऐसी लकीर देखी थी लेकिन अब मुझे मुतलक़ दिखायी नहीं देता ।

पहला नाबीना

और मुझे जो देर होने की ख़बर उस वक्त होती है जब मुझे भूख लगती है और इस वक्त मैं भूखा हूँ ।

तीसरा नाबीना

लेकिन आसमान की तरफ़ तो देखो शायद कुछ नज़र आये ।

(सबके सब आसमान की तरफ़ सर उठाते हैं उन तीनों को छोड़कर जो मादरज़ाद[1] अंधे थे जो ज़मीन की तरफ़ ताकते रहते हैं ।)

---

[1] जन्म से

छठवाँ नाबीना

मुझे नहीं मालूम होता कि हम लोग बिलकुल आसमान के नीचे हैं।

पहला नाबीना

हमारी आवाजें इस तरह गूँज रही हैं गोया वह किसी ग़ार[1] में हों।

सबसे बुड्ढा नाबीना

मेरा तो ख़याल है कि उनके गूँजने का सबब शाम का वक़्त है।

नौजवान अंधी औरत

मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मेरे हाथों पर चाँदनी फैली हुई है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मेरा ख़याल है कि सितारे निकले हैं। मैं उन्हें सुन रही हूँ।

नौजवान अंधी औरत

मैं भी सुन रही हूँ।

पहला नाबीना

मुझे तो कोई आवाज़ नहीं सुनायी देती।

दूसरा नाबीना

मुझे तो अपने साँस लेने की आवाज़ सुनायी दे रही है।

सबसे बुड्ढा नाबीना

मेरा ख़याल है कि औरतें सही कहती हैं।

पहला नाबीना

मैंने कभी सितारों की आवाज़ नहीं सुनी।

---

1. गुफा

दूसरे और तीसरे अंधे आदमी

हमने भी नहीं सुनी ।

(तायराने-शब[1] का एक गोल दफ़्अतन्[2] पत्तियों पर उतरता है ।)

दूसरा नाबीना

सुनो सुनो ! यह ऊपर क्या है ? सुन रहे हो ?

सबसे बुड्ढा नाबीना

हमारे और आसमान के बीच से कोई चीज़ गुज़र गयी ।

छठवाँ नाबीना

हमारे बालाए-सर[3] कोई चीज़ हरकत कर रही है लेकिन हम उसे पा नहीं सकते ।

पहला नाबीना

इस आवाज़ की हक़ीक़त मेरी समझ में नहीं आती । मैं ख़ानक़ाह की तरफ़ लौटना चाहता हूँ ।

दूसरा नाबीना

हम यह जानना चाहते हैं कि हम कहाँ हैं ?

छठवाँ नाबीना

मैंने खड़े होने की कोशिश की । हमारे चारों तरफ़ काँटे ही काँटे हैं और कुछ नहीं । अब मैं अपने हाथ भी फैलाने की जुर्रत नहीं कर सकता ।

तीसरा नाबीना

मालूम नहीं हम कहाँ हैं ?

---

१ रात की चिड़ियाँ २ अचानक ३ सर के ऊपर

सबसे बुड्ढा मातीना

हम इसे नहीं जान सकते ।

छठवाँ मातीना

हम खानगाह से बहुत दूर हैं । मुझे वहाँ की कोई आवाज नहीं सुनायी देती ।

तीसरा मातीना

बहुत अर्से से मुझे सूखी पत्तियों की बू आ रही है ।

छठवाँ मातीना

हममें से किसी ने इस जज़ीरे को जमानए-गुजिश्ता' में देखा है और वह बतला सकता है कि हम कहाँ हैं ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

जब यहाँ आये तो हम सब के सब अंधे थे ।

पहला मातीना

हमें कभी कुछ दिखायी ही नहीं दिया ।

दूसरा मातीना

हमें खामखाह परेशान होने की क्या जरूरत है । वह जल्द वापस आयेंगे । जरा देर और उनका इंतज़ार करो लेकिन आइंदा से हम फिर उनके साथ न आयेंगे ।

सबसे बुड्ढा मातीना

हम अकेले घूमने नहीं निकल सकते ।

---

१ पुराने जमाने

पहला मालीना

हम निकलेंगे ही न। मुझे घूमना पसंद नहीं।

दूसरा मालीना

हमारी बाहर आने की ख्वाहिश नहीं थी किसी ने उनसे यह बर्दाश्त नहीं की।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

जंजीर में यह सातील का दिन है। सातीलों में हम सब मेरे बच्चे निकलते हैं।

तीसरी अंधी औरत

मैं सो ही रही थी कि उन्होंने आकर मेरे कंधे को हिलाया और कहा, उठो-उठो, वक्त आ गया धूप निकली हुई है। क्या धूप निकली हुई थी ? मुझे इसकी खबर नहीं। मैंने कभी धूप नहीं देखी।

सबसे बुड्ढा मालीना

मैं बहुत छोटा था तब मैंने धूप देखी थी।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मैंने भी बहुत दिन हुए जब मैं बहुत छोटी थी लेकिन अब बिल्कुल याद नहीं।

तीसरा मालीना

हर बार जब धूप निकलती है तो यह क्यों हम बाहर आते हैं ? क्या हम इसमें कुछ खास आनन्द ले आते हैं ? मुझे तो दिन कुछ मालूम नहीं होता कि रात है या दिन ?

छठवाँ नाबीना

मुझे दोपहर के वक्त घूमना अच्छा मालूम होता है। मुझे उस वक्त बहुत चमक महसूस होती है और मेरी आँखें खुलने की कोशिश करती हैं।

तीसरा नाबीना

मुझे तो अपनी ख्वाबगाह[1] में कोयले के सामने बैठना ज्यादा पसंद है। आज सुबह खूब आग रोशन थी।

दूसरा नाबीना

वह हमें धूप खिलाने के लिए सहन में ला सकते थे। वहाँ दीवारों की हिफ़ाज़त में तो रहते। जब दरवाज़ा बंद रहता है तो कोई खौफ़ नहीं मालूम होता। मैं हमेशा दरवाज़ा बंद कर दिया करता हूँ। तुमने मेरी कुहनी क्यों छुई?

पहला नाबीना

मैंने नहीं छुई। मैं तुमसे बहुत दूर हूँ।

दूसरा नाबीना

मैं सच कहता हूँ कि किसी ने मेरी कुहनी छुई है।

पहला नाबीना

हममें से किसी ने नहीं छुई।

दूसरा नाबीना

मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ।

---
१ शयनघर

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

या खुदा ! खुदा ! हम कहाँ हैं ?

पहला नाबीना

हम यहाँ हमेशा नहीं बैठे रह सकते ।

(किसी दूर की घड़ी में आहिस्ता-आहिस्ता बारह बजते हैं ।)

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

उफ़ ! हम लोग खानकाह से कितनी दूर निकल आये हैं ।

सबसे बुड्ढा नाबीना

आधी रात हो गया ।

दूसरा नाबीना

दोपहर है । कोई जानता है ? बोलो ।

छठवाँ नाबीना

मुझे मालूम नहीं लेकिन मैं ख़याल करता हूँ कि हम लोग साये में हैं ।

पहला नाबीना

मुझे कुछ नहीं मालूम होता । मैं बहुत देर तक सो गया ।

दूसरा नाबीना

मुझे भूख लगी हुई है ।

और सब के सब

हम भी भूखे और प्यासे हैं ।

दूसरा नाबीना

क्या हम यहाँ आये हुए देर हुई ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि मैं यहाँ सदियों से हूँ ।

छठवाँ नाबीना

मुझे कुछ-कुछ मालूम हो रहा कि हम कहाँ हैं ।

तीसरा नाबीना

हमें उस तरफ जाना चाहिए जिधर से बारह बजने की आवाज आयी है ।

(तायराने शब यकायक तारीकी[1] में शोर करने लगते हैं ।)

पहला नाबीना

तुम लोग सुनते हो ? सुनते हो ?

दूसरा नाबीना

यहाँ हमारे सिवाय कोई और भी है ?

तीसरा नाबीना

मुझे बहुत देर से इसका शुबहा है । कोई हमारी बातें सुन रहा है । क्या वह लौट आये ?

पहला नाबीना

मालूम नहीं क्या है । यह हमारे ऊपर है ।

दूसरा नाबीना

क्या दूसरों ने कुछ नहीं सुना ? तुम लोग हमेशा खामोश रहते हो

सबसे बुड्ढा नाबीना

हम तो अभी तक सुन रहे हैं ।

---
१ अँधेरे

नौजवान अंधी औरत

मुझे अपने इर्द-गिर्द हर चीज़ की आवाज़ आ रही है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

ऐ खुदा! ऐ खुदा! हम कहाँ हैं?

छठवाँ नाबीना

मुझे कुछ-कुछ मालूम हो रहा है कि हम कहाँ हैं। खानकाह हम बड़ी नदी के उस पार है। हम पुराने पुल से होकर आये हैं। महात्मा जी हमको जज़ीरे के शुमाल में लाये हैं। हम नदी से दूर नहीं हैं। अगर हम एक लमहा और रुक कर सुनें तो उसकी आवाज़ भी शायद सुनायी दे। अगर महात्मा जी न लौटेंगे तो हमको पानी के किनारे तक जाना पड़ेगा। वहाँ शबोरोज़[1] बड़े-बड़े जहाज़ आते-जाते रहते हैं। जहाज़ों के मल्लाह हमें किनारे पर खड़े देख लेंगे। यह भी मुमकिन है कि हम उस जंगल में हों जो रोशनी के मीनार को घेरे हुए है। लेकिन मुझे बाहर निकलने का रास्ता नहीं मालूम है। कोई मेरे साथ चलने पर तैयार है?

पहला नाबीना

चुपचाप बैठे रहो। उनका इंतज़ार किये जाओ। हम बड़ी नदी का रास्ता नहीं मालूम है और खानकाह के चारों तरफ दलदल है। बस उनका इंतज़ार करना चाहिए। वह आयेंगे ज़रूर आयेंगे।

---

[1] दिन-रात

छठवाँ नाबीना

कोई जानता है कि हम किस रास्ते से आये हैं ? जब हम आ रहे थे तो उन्होंने हमें समझाया था।

पहला नाबीना

मैंने बिलकुल ध्यान नहीं दिया।

छठवाँ नाबीना

क्या और किसी ने ध्यान से सुना था ?

तीसरा नाबीना

आइंदा हमको उनकी बातों को ग़ौर से सुनना चाहिए।

छठवाँ नाबीना

क्या हममें से किसी की पैदाइश इस जज़ीरे में हुई है ?

सबसे बुड्ढा आदमी

तुम्हें ख़ूब मालूम है कि हम सब यहाँ दूसरी जगह से आये हैं।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

हम समुंदर के उस पार से आये हैं।

पहला नाबीना

मुझे अंदेशा हुआ था कि समुंदर से डरते-डरते मर न जाऊँ।

दूसरा नाबीना

मुझे भी। हम साथ-साथ आये थे।

तीसरा नाबीना

तीनों एक ही महाल से आये।

पहला माबीना

लोग कहते हैं कि हमारा गाँव शुमाल की तरफ़ यहाँ से नज़र आता है, बशर्ते कि आसमान साफ़ हो। उसमें कोई मीनार नहीं है।

तीसरा माबीना

हम इत्तफ़ाक़ से यहाँ उतर पड़े।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मैं दूसरी तरफ़ से आयी हूँ।

दूसरा माबीना

तुम कहाँ से आयी हो?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मुझे अब इसका ख़याल करते हुए खौफ़ मालूम होता है। मुझे अब उसकी याद नहीं रही। बहुत दिन गुज़र गये। वहाँ यहाँ से ज़्यादा सर्दी पड़ती थी।

नौजवान अंधी औरत

मैं भी बहुत दूर से आयी हूँ।

पहला माबीना

आख़िर तुम कहाँ से आयी हो?

नौजवान अंधी औरत

यह बतलाना बहुत मुश्किल है। मैं उसे क्योंकर बयान कर सकती हूँ। यह यहाँ से निहायत दूर है समुंदरों के उस पार। वह बहुत बड़ा मुल्क है। मैं सिर्फ़ इशारों से उसका हाल बता

सकती हूँ लेकिन आँखें तो हैं ही नहीं। मैं बहुत दिनों तक भटकती फिरी हूँ लेकिन मैंने सूरज और आग और पानी और पहाड़ और लोगों के चेहरे और अजीब क़िस्म के फूल सब देखे हैं। बैसे फूल इस जज़ीरे में नहीं हैं। यह तो बिलकुल वीरान, सुनसान और ठंडा है। जब से मेरी निगाह जाती रही है मुझे फिर बू का एहसास नहीं हुआ। लेकिन मैंने अपने वाल्दैन[1] और बहनों को देखा है। मैं उस वक़्त बहुत छोटी थी और बिलकुल न जानती थी कि कहाँ हूँ। मैं उस वक़्त तक समुन्दर के किनारे खेला करती थी ताहम आँखों से देखने की याद अब भी खूब है एक दिन मैंने पहाड़ की चोटी पर से बर्फ़ की तरफ़ देखा उन्हीं दिनों मुझे उन लोगों की पहचान होने लगी थी जो ग़मनसीब होनेवाले हैं।

पहला नाबीना

तुम्हारा मतलब क्या है ?

सोलवाम अंधी औरत

मैं अब भी कभी-कभी ऐसे आदमियों को उनकी आवाज़ से पहचान सकती हूँ मेरे दिल में ऐसी यादें हैं जो ज़्यादा रौशन हो जाती हैं मगर मुझे उनका ध्यान न हो।

पहला नाबीना

मुझे कुछ याद नहीं मैं

[1] माँ-बाप

(बड़ी-बड़ी चिड़िया का एक झुण्ड शोर मचाता हुआ पत्तियों के ऊपर से गुज़रता है।)

सबसे बूढ़ा मावोना

फिर आसमान में कोई बाज़ गुज़र रहा है।

दूसरा मावोना

तुम यहाँ क्यों आयीं?

सबसे बूढ़ा मावोना

किस से पूछ रहे हो?

दूसरा मावोना

अपनी नौजवान साथिन से।

नौजवान अंधी औरत

लोगों ने मुझसे कहा कि महात्मा जी मुझे अच्छा कर सकते हैं। वह कहते हैं कि एक दिन मेरी आँखें ज़रूर खुलेंगी। तब मैं इस अंधेरे से बच जाऊँगी।

पहला मावोना

हम उजाले की तो शबताई[1] करना चाहते हैं।

दूसरा मावोना

क्या हम यहीं हमेशा पड़े रहेंगे?

तीसरा मावोना

महात्मा जी बहुत बूढ़े हो गये हैं। उन्हें हम लोगों को अच्छा करने के लिए अब समय नहीं है।

---

[1] बोतना

नौजवान अंधी औरत

मेरी पलकें बंद हैं लेकिन मुझे मालूम होता कि मेरी आँखों में बीनाई है।

पहला नाबीना

मेरी आँखें तो खुली हुई हैं

दूसरा नाबीना

मैं सोता हूँ तब भी आँखें खुली रहती हैं।

तीसरा नाबीना

आँखों का जिक्र छोड़ो।

सबसे बुड्ढा नाबीना

एक रोज़ शाम को दुआ करते वक्त मुझे औरतों की तरफ़ से एक ऐसी आवाज़ सुनायी दी कि जिसे मैं पहचान न सका। तुम्हारी आवाज़ से मालूम हो जाता है कि तुम नौजवान हो मैं तुम्हारी आवाज़ सुनकर मैं तुम्हें देखना चाहता था

पहला नाबीना

मुझे कभी इसका इल्म नहीं हुआ।

दूसरा नाबीना

वह हमें कुछ बतलाते ही नहीं।

छठवां नाबीना

लोग कहते हैं कि तुम ख़ूबसूरत हो, जैसे कोई औरत जो बहुत दूर से आयी हो।

नौजवान अंधी औरत

मैंने अपना खुद मुँह कभी नहीं देखा।

सबसे बूढ़ा अंधा आदमी

हमने कभी एक दूसरे को नहीं देखा। हम तो आपस में सवाल करते हैं, जवाब देते हैं, साथ रहते हैं, साथ चलते फिरते हैं लेकिन बिलकुल नहीं जानते कि हम क्या हैं। एक दूसरे को दोनों हाथों से छूने से क्या होता है। आँखें हाथों से ज्यादा जागरूक होती हैं।

छठवाँ आदमी

जब तुम लोग धूप में निकलते हो तो कभी-कभी मुझे तुम्हारा साया दिखाई देता है।

सबसे बूढ़ा आदमी

हमने उस घर को नहीं देखा जिसमें रहते हैं। दीवारों और खिड़कियों को हाथ से छूने से क्या होता है। हम बिलकुल नहीं जानते कि हम कहाँ रहते हैं।

सबसे बूढ़ी अंधी औरत

लोग कहते हैं कि यह एक विशाल शाही किस्म का पुराना किला है। इस बुर्ज के सिवा जिसमें साधु जी रहते हैं यहाँ कभी रोशनी नज़र नहीं आती।

पहला आदमी

जिनकी आँख नहीं है उन्हें रोशनी का क्या करना है?

नौजवान अंधी औरत

मेरी पलकें बंद हैं लेकिन मुझे मालूम होता कि मेरी आँखों में बीनाई है।

पहला नाबीना

मेरी आँखें तो खुली हुई हैं

दूसरा नाबीना

मैं सोता हूँ तब भी आँखें खुली रहती हैं।

तीसरा नाबीना

आँखों का जिक्र छोड़ो।

सबसे बुड्ढा नाबीना

एक रोज शाम को घूमा करते वक्त मुझे औरतों की तरफ से एक ऐसी आवाज़ सुनायी दी कि जिसे मैं पहचान न सका। तुम्हारी आवाज़ से मालूम हो जाता है कि तुम नौजवान हो मैं तुम्हारी आवाज सुनकर मैं तुम्हें देखना चाहता था

पहला नाबीना

मुझे कभी इसका इल्म नहीं हुआ।

दूसरा नाबीना

वह हमें कुछ बतलाते ही नहीं।

छठवाँ नाबीना

लोग कहते हैं कि तुम खूबसूरत हो, जैसे कोई औरत जो बहुत दूर से आयी हो।

नौजवान अंधी औरत

मैंने अपने तई खुद कभी नहीं देखा।

सबसे बुड्ढा अंधा आदमी

हमने कभी एक दूसरे को नहीं देखा। हम तो आपस में सवाल करते हैं जवाब देते हैं साथ रहते हैं साथ चलते फिरते हैं, लेकिन बिलकुल नहीं जानते कि हम क्या हैं। एक दूसरे को दोनों हाथों से छू लेने से क्या होता है। आँखें हाथों से ज्यादा जानकार होती हैं

छठवाँ नाबीना

जब तुम लोग धूप में निकलते हो तो कभी-कभी मुझे तुम्हारा साया दिखायी देता है।

सबसे बुड्ढा नाबीना

हमने उस घर को नहीं देखा जिसमें रहते हैं। दीवारों और खिड़कियों का हाथ से छूने से क्या होता है। हम बिलकुल नहीं जानते कि हम कहाँ रहते हैं।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

लोग कहते हैं कि यह एक बिलकुल तारीक शिकस्ता पुराना क़िला है। इस बुर्ज के सिवा जिसमें साधू जी रहते हैं वहाँ कभी रोशनी नज़र नहीं आती।

पहला नाबीना

जिनके आँखें नहीं हैं उन्हें रौशनी की क्या ज़रूरत है?

छठवाँ नाबीना

जब मैं ख़ानक़ाह के आसपास भेड़ें चराता हूँ तो शाम के वक़्त वह बुर्ज की रौशनी देखकर आप ही आप घर पहुँच जाती हैं। उन्होंने मुझे कभी नहीं भटकाया।

सबसे बुड्ढा नाबीना

हमें साथ रहते मुद्दतें गुज़र गईं लेकिन हमने एक दूसरे को कभी नहीं देखा, गोया हम हमेशा तनहा रहते हैं। बिना देखे मुहब्बत नहीं पैदा होती ...

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मुझे कभी-कभी ख़्वाब में मालूम होता है कि मैं देख सकती हूँ।

सबसे बुड्ढा अंधा

मुझे सिर्फ़ अपने ही में दिखायी देता है।

पहला नाबीना

मैं अक्सर आधी रात को ख़्वाब देखता हूँ।

दूसरा नाबीना

जब हाथों में हरकत ही नहीं होती तो इंसान किस चीज़ का ख़्वाब देख सकता है?

(एक तूफ़ान जंगल को हिला देता है और पत्तियाँ झड़ने लगती हैं।)

पाँचवाँ नाबीना

किसने मेरे हाथ छुए?

पहला नाबीना

हमारे चारों तरफ़ कोई चीज़ गिर रही है।

सबसे बुड्ढा नाबीना

ऊपर से आ रही है। मालूम नहीं क्या है

पाँचवाँ नाबीना

किसने मेरे हाथ छुए। मैं सो रहा था। मुझे खूब सोने दो।

सबसे बुड्ढा नाबीना

किसी ने तुम्हारे हाथ नहीं छुए।

पाँचवाँ नाबीना

किसने मेरे हाथ पकड़े थे ? ज़ोर से बोलो। मैं ज़रा ऊँचा सुनता हूँ।

सबसे बुड्ढा नाबीना

हमको खुद नहीं मालूम।

पाँचवाँ नाबीना

क्या कोई हमें ख़बरदार करने आया है ?

पहला नाबीना

इसको जवाब देना फ़िज़ूल है। उसे कुछ सुनायी नहीं देता।

तीसरा नाबीना

यह मानना पड़ेगा कि बहरे बड़े खुशनसीब होते हैं।

सबसे बुड्ढा नाबीना

मैं बैठे बैठे थक गया।

छठवाँ नाबीना

मैं यहाँ रहते रहते थक गया।

दूसरा नाबीना

मुझे ऐसा मालूम होता है कि हम लोग बहुत दूर बठे हुए हैं। थाओ ज़रा और क़रीब आ जायें ठंड पड़ने लगी।

तीसरा नाबीना

मुझ खड़े होते डर मालूम होता है। जहाँ बैठे हो वहीं बैठे रहो।

सबसे बुड्ढा नाबीना

मालूम नहीं हम लोगों के बीच में क्या हो।

छठवाँ नाबीना

मेरे दोनों हाथों से खून निकलता हुआ मालूम होता है। मैं खड़ा होना चाहता था।

तीसरा नाबीना

आवाज़ से ऐसा मालूम होता है कि तुम मेरी तरफ़ झुके हुए हो।

(अंधी पगली औरत ज़ोर से अपनी आँखें मलती है और कराहते हुए बार-बार बेजान साधू की तरफ़ सर फेरती है।)

पाँचवाँ नाबीना

मुझे अब दूसरा शोर सुनायी देता है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मेरे ख़याल म हमारी पगली बहुत आँसें मल रही है।

दूसरा नाबीना

बस वह भी क्या करती है मैं रोज़ रात को सुना करता हूँ।

तीसरा नाबीना

वह पगली से कुछ नहीं बोलती।

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

जब से बच्चा पैदा हुआ वह एक बार भी नहीं बोली। मालूम होता है वह डरती है

सबसे बुड्ढा नाबीना

तो क्या तुम लोगों को यहाँ डर नहीं लगता?

पहला नाबीना

किसको?

सबसे बुड्ढा नाबीना

बाक़ी बाहम सब लोगों को।

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

हाँ हम सब यहाँ डरते हैं।

नौजवान अंधी औरत

हम बहुत दिनों से डर रहे हैं।

पहला नाबीना

तुम यह क्यों पूछते हो?

सबसे बुड्ढा नाबीना

मैं खुद नहीं जानता कि क्यों पूछता हूँ कोई बात ऐसी है जो मेरे ज़ेहन में नहीं आती ऐसा मालूम होता है कि मेरे कानों में यकायक किसी के रोने की आवाज़ आयी

पहला नाबीना

डरने से क्या होता है। शायद पगली औरत रोती है।

सबसे बूढ़ा नाबीना

नहीं इसके अलावा कुछ और है यक़ीनन कुछ और है सिर्फ़ उसके रोने से मुझे ख़ौफ़ नहीं मालूम होता।

सबसे बूढ़ी अंधी औरत

वह जब अपने बच्चे को दूध पिलाने लगती है तो हमेशा रोती है।

पहला नाबीना

सिर्फ़ वही इस तरह रोती है।

सबसे बूढ़ी अंधी औरत

लोग कहते हैं कि अब भी कभी-कभी उसे दिखायी देता है

पहला नाबीना

हम किसी का रोना नहीं सुनते।

सबसे बूढ़ा नाबीना

रोने के लिए देखना ज़रूरी है।

नौजवान अंधी औरत

मुझे यहाँ कहीं से फूलों की महक आयी है।

पहला नाबीना

मुझे तो सिर्फ़ मिट्टी की बू आती है।

नौजवान अंधी औरत

हमारे क़रीब फूल हैं, फूल हैं।

दूसरा नाबीना

मुझे तो सिर्फ़ मिट्टी की बू आती है।

नौजवान अंधी औरत

मुझे अभी हवा में फूलों की खुशबू आयी।

तीसरा नाबीना

मुझे तो सिर्फ़ मिट्टी की बू आ रही है।

सबसे बूढ़ा नाबीना

मेरा ख़याल है कि औरतें सही कहती हैं।

छठवाँ नाबीना

फूल कहाँ हैं? मैं जाकर चुनूँगा।

नौजवान अंधी औरत

खड़े हो जाओ तुम्हारे दायीं तरफ़ हैं।

(छठवाँ अंधा आहिस्ता आहिस्ता खड़ा होता है और दरख़्तों और झाड़ियों में उलझता हुआ नरगिसों की तरफ़ जाता है जिन्हें वह पैरों से कुचल डालता है।)

नौजवान अंधी औरत

मुझे सुनायी देता है कि तुम हरी डालियों को तोड़े डालते हो। ठहरो, ठहरो।

पहला नाबीना

फूलों की फ़िक्र मत करो सोचो कि क्योंकर लौटोगे।

छठवाँ नाबीना

अब मैं अपने क़दमों को फेरने की जुरअत नहीं कर सकता।

नौजवान अंधी औरत

हरगिज़ मत आना। ठहरो (वह उठती है) आह! ज़मीन कितनी

सबसे बुड्ढा माबीना

मैं समझता हूँ कि औरतें सही कहती हैं।

तीसरा माबीना

तब तो यह नहीं आता होगा।

पहला माबीना

हवा कहाँ से आती है?

दूसरा माबीना

समुंदर से।

सबसे बुड्ढा माबीना

हवा हमेशा समुंदर की तरफ़ से आती है। समुंदर हमें चारों तरफ़ से घेरे हुए है। वह किसी दूसरी तरफ़ स नहीं आ सकती।

पहला माबीना

भई समुंदर का खयाल मत करो।

दूसरा माबीना

यह क्योंकर मुमकिन है। वह तो ज़रा देर में हमारे पास आ जायेगा।

पहला माबीना

तुम्हें क्या मालूम कि यह समुंदर की ही आवाज़ है।

दूसरा माबीना

मुझे उसकी लहरें ऐसी क़रीब मालूम होती हैं कि मैं उसमें अपने हाथ डुबा सकता हूँ। हम यहाँ नहीं ठहर सकते। कहीं वह हमें चारों तरफ़ से घेर न ले।

सबसे बूढ़ा नाबीना

तुम कहाँ जाना चाहते हो ?

दूसरा नाबीना

इसकी कुछ परवाह नहीं इसकी कुछ परवाह नहीं । अब पानी की यह गरज नहीं सुन सकता । यहाँ से भाग चलो चलो !

तीसरा नाबीना

मुझे ऐसा मालूम होता है कि कोई और आवाज भी है । कान लगाओ । (तेज और दूर के क़दमों की आवाज सूखी पत्तियों में सुनायी देती है ।)

पहला नाबीना

कोई चीज़ हमारी तरफ़ आ रही है !

दूसरा नाबीना

साधु जी हैं । साधु जी हैं ! वह वापस आ रहे हैं ।

तीसरा नाबीना

वह छोटे-छोटे क़दम रख रहे हैं, बिलकुल एक छोटे बच्चे की तरह

दूसरा नाबीना

आज उन्हें कुछ बुरा-भला मत कहना !

सबसे बूढ़ी अंधी औरत

मेरे खयाल में यह आदमी के क़दम नहीं हैं ।

(एक बड़ा कुत्ता जंगल में आता है और उनके सामने से गुजरता है । सन्नाटा है ।

पहला नाबीना

यह कौन है ? अरे तुम कौन हो ? हमारे ऊपर रहम करो हम बहुत देर से बैठे हुए हैं (कुत्ता रुक जाता है और लौटकर अपने अगले पंजे को पहले नाबीना की घुटनियों पर रख देता है।) अरे ! आह ! तुमने मेरी घुटनियों पर क्या रख दिया ? यह क्या है ? अरे, यह तो कोई जानवर है ! कुत्ता मालूम होता है हाँ हाँ कुत्ता ही है। यह हमारी खानक़ाह का कुत्ता है। इधर आओ इधर आओ। हमें रास्ता दिखाने आया है। इधर आ इधर आ !

पहला नाबीना

वह हमें रास्ता दिखाने आया है। हमारे पैरों के निशान देखता चला आया है। यह मेरे हाथ चाट रहा है गोया मुझे सदियों के बाद देखा है। खुशी के मारे गुर्रा रहा है खुशी के मारे मर न जाये ! सुनो कान लगाओ !

और सब के सब

इधर आ ! इधर आ !

सबसे बुड्ढा नाबीना

शायद वह किसी आदमी के आगे-आगे आया है

पहला नाबीना

नहीं, नहीं बिलकुल अकेला आया है। मुझे और किसी के आने की आहट नहीं मिलती। अब हमें किसी दूसरे मालिक की ज़रूरत नहीं। इससे अच्छा और कौन होगा। हम जहाँ जायेंगे वहीं

जायगा, हमारा हुक्म मानेगा---

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मैं इसके साथ नहीं जा सकती।

नौजवान अंधी औरत

मैं भी नहीं जा सकती।

पहला नाबीना

क्यों? हमारी निगाह से इसकी निगाह बेहतर है।

दूसरा नाबीना

इन औरतों को बकने दो।

तीसरा नाबीना

मेरा ख़याल है कि आसमान में कुछ तग़य्युर[1] हो गया है। हवा अब साफ़ है---मैं ख़ूब साँस ले सकता हूँ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

समुंदरी हवा हमारे चारों तरफ़ चल रही है।

छठवाँ नाबीना

मुझे ऐसा मालूम होता है कि रौशनी आ रही है। शायद आफ़-ताब निकल रहा है।

सबसे बुड्ढा नाबीना

मेरा ख़याल है कि सर्दी पड़नेवाली है।

पहला नाबीना

अब हमें रास्ता मिल जायेगा। कुत्ता मुझे खींच रहा है। वह

---

१ परिवर्तन

पहला नाबीना

मेरा खयाल है...मेरा खयाल है कि यह साधु जी हैं। वह यहाँ हैं। आओ आओ।

दूसरा नाबीना

क्या वह खड़े हैं?

तीसरा नाबीना

तब वह मरे नहीं हैं।

सबसे बुड्ढा नाबीना

कहाँ हैं?

छठवाँ नाबीना

आकर देखो।

(पगली औरत और बहरे अंधे के सिवा सब उठते हैं और टटोलते हुए मुर्दे की तरफ जाते हैं।)

दूसरा नाबीना

क्या यही हैं? यही?

तीसरा नाबीना

हाँ हाँ, मैं उन्हें पहचानता हूँ।

पहला नाबीना

या खुदा, या खुदा, हमारा क्या हाल होगा!

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

स्वामी जी! क्या यह तुम्हीं हो? तुम्हें क्या हो गया है? हमारी बातों का कुछ जवाब दो। हम सब तुम्हारे पास

जमा है। हाय हाय!

सबसे बूढ़ा नाबीना

थोड़ा-सा पानी लाओ। शायद अभी कुछ जान है।

छठवाँ नाबीना

हाँ, उन्हें बचाना चाहिए —ग़ालिबन् वह हमें खानक़ाह तक पहुँचाने के क़ाबिल हो जायेंगे।

तीसरा नाबीना

बिलकुल बेकार... मुझे उनके दिल की आवाज़ नहीं सुनायी दी — बिलकुल ठंडे हो गये।

पहला नाबीना

एक लफ़्ज़ भी न बोले...

तीसरा नाबीना

उन्हें लाज़िम था कि हमें बता देते।

दूसरा नाबीना

हाय वह कितने बूढ़े हो गये थे। मैंने अबकी पहली बार उनका चेहरा छुआ है...

तीसरा नाबीना

(लाश को टटोलकर) हम लोगों से लंबे हैं!

दूसरा नाबीना

इनकी आँखें खुली हुई हैं। हाथ बाँधे हुए मरे हैं।

पहला नाबीना

उनके इस तरह मरने की कोई वजह नहीं थी

दूसरा माबीना

वह मरे नहीं हैं। एक पत्थर पर बैठे हैं

सबसे बूढ़ी अंधी औरत

या खुदा ! ...मुझे यह सब न मालूम था ...न मालूम था ...वह इतने दिनों से बीमार थे ...घाव उन्हें बहुत तकलीफ़ हुई होगी हाय-हाय ! वह कभी शिकायत का एक हर्फ़ जबान पर नहीं लाए ...सिर्फ़ हमारे हाथों को दबाकर अपना दर्देदिल ज़ाहिर किया ...इंसान हमेशा इन बातों को नहीं समझता ...कभी नहीं समझता ...आओ मिलकर उनके लिए दुआए खैर[1] करें।

(औरतें घुटनों के बल बैठकर कराहती हैं।)

पहला माबीना

मुझे भूकते हुए डर मालूम होता है ...

दूसरा माबीना

क्या मालूम किस चीज़ पर घुटने पड़ें

तीसरा माबीना

क्या वही बीमार थे। हमसे कभी नहीं बतलाया !

दूसरा माबीना

जाते वक्त वह कुछ आहिस्ता आहिस्ता कह रहे थे। शायद हमारी नौजवान बहन से कुछ कह रहे थे। क्या उन्होंने क्या कहा ?

पहला माबीना

वह जवाब न देंगी।

---

१ मंगलकामना की प्रार्थना

दूसरा नाबीना
क्या अब तुम हमारी बातों का जवाब न दोगी ? तुम कहाँ हो बोलो !

सबसे बुड्ढी औरत
तुम लोगों ने उन्हें बहुत परीशान किया । तुम्हीं ने उन्हें मारा है । तुम आगे नहीं बढ़ते थे । तुम सड़क के किनारे पत्थरों पर बैठकर खाना चाहते थे । तुम सारे दिन भुनभुनाया करते थे । मैंने उन्हें आहें खींचते हुए सुना है आखिर वह मायूस हो गये

सबसे बुड्ढो
हमें कुछ नहीं मालूम था । हमने उनकी सूरत कभी नहीं देखी हम इन फूटी आँखों से क्या देख सकते हैं ! उन्होंने कभी किसी का गिला नहीं किया ..अब मौक़ा निकल गया मैंने तीन आद-मियों को मरते देखा .. लेकिन इस तरह कोई नहीं मरा.. अब हमारी बारी है ..

पहला नाबीना
मैंने उन्हें हरगिज नहीं परीशान किया...मैंने कभी कुछ नहीं कहा ।

दूसरा नाबीना
न मैंने हो । हम बेटव्व उनका हुक्म मानते थे ।

तीसरा नाबीना
वह पगली के वास्ते पानी लाने जा रहे थे, वहीं मर गये ।

पहला नाबीना

अब हम क्या करें। कहाँ जायें!

तीसरा नाबीना

कुत्ता कहाँ गया?

पहला नाबीना

यह बैठा है। यह लाश के पास से हटता ही नहीं।

तीसरा नाबीना

उसे हटा दो भगा दो, भगा दो!

पहला नाबीना

वह इस लाश को नहीं छोड़ता।

दूसरा नाबीना

हम एक मुर्दा आदमी के पास नहीं बैठ सकते... हम इस तरह तारीकी में नहीं मरना चाहते!

तीसरा नाबीना

आओ हम लोग मिलकर बैठें इधर-उधर न बिखरें, एक दूसरे का हाथ पकड़ लें। सब इसी पत्थर पर बैठें। और लोग कहाँ हैं? यहाँ आ जाओ सब यहाँ आ जाओ।

सबसे बूढ़ा नाबीना

तुम कहाँ हो?

तीसरा नाबीना

मैं यहाँ हूँ! हम सब एक साथ हैं न? जरा और पास
आओ। तुम लोगों के हाथ कहाँ हैं? सख्त सर्दी है।

मौसवान अंधी औरत

ओफ़ ! तुम लोगों के हाथ कितने सद हैं !

तीसरा नाबीना

तुम क्या कर रही हो ?

मौसवान अंधी औरत

मैं आँखों पर हाथ फेर रही थी । मुझे ऐसा मालूम होता था कि मेरी आँखें खुला ही चाहती हैं ।

पहला नाबीना

यह रो कौन रहा है ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

वही पगली सिसक रही है ।

पहला नाबीना

और अभी तक उसे हक़ीक़त मालूम ही नहीं ।

सबसे बुड्ढा नाबीना

मेरा ख़याल है कि हम सब यहीं मरेंगे ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

ग़ालिबन् कोई आयेगा –

सबसे बुड्ढा नाबीना

और कौन आनेवाला है ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

यह नहीं मालूम ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

वही पगली सबसे ज्यादा थरथरा रही है।

तीसरा नाबीना

मुझे लड़के की आवाज़ नहीं सुनायी देती।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

शायद वह अभी तक दूध पी रहा है।

सबसे बुड्ढा नाबीना

एक वही है जो देख सकता है कि हम कहाँ हैं।

पहला नाबीना

मुझे शुमाली हवा की आवाज़ आ रही है।

छठवाँ नाबीना

मेरा खयाल है कि सितारे छिप गये। अब बर्फ़ गिरेगी।

दूसरा नाबीना

तब तो हमारा काम ही तमाम हुआ।

तीसरा नाबीना

अगर हममें से कोई सो जाये तो उसे फ़ौरन जगा देना चाहिए।

सबसे बुड्ढा नाबीना

मुझे ज़ोर से नींद आ रही है।

(एक आँधी पत्तियां को उड़ा देती है।)

नौजवान अंधी औरत

तुम लोग सूखी पत्तियों की आवाज़ सुन रहे हो? मेरा खयाल है कोई हमारी तरफ़ आ रहा है।

दूसरा नाबीना

हवा है, कान लगाकर सुनो !

तीसरा नाबीना

अब कोई न आयेगा !

सबसे बुड्ढा नाबीना

शायद काफ़ी सर्दी आ रही है ।

नौजवान अंधी औरत

मुझे किसी आदमी के दूरी पर चलने की आवाज़ सुनायी देती है ।

पहला नाबीना

मुझे सिर्फ़ सूखी पत्तियों की आवाज़ सुनायी देती है !

नौजवान अंधी औरत

मुझे किसी के क़दमों की आहट मिल रही है ।

दूसरा नाबीना

मुझे सिर्फ़ शुमाली हवा की आवाज़ सुनायी देती है ।

नौजवान अंधी औरत

मैं तुमसे सच कहती हूँ कोई हमारी तरफ़ आ रहा है !

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मुझे भी किसी की बहुत धीमी चाल की आवाज़ सुनायी देती है ।

सबसे बुड्ढा नाबीना

मेरा ख़याल है कि औरतें ठीक कहती हैं ।

(बर्फ़ के टुकड़े गिरने लगते हैं ।)

पहला माबीना

उफ़ उफ़ ! यह मेरे हाथों पर इतनी ठंडी कौन-सी चीज़ रही है !

छठवाँ माबीना

बर्फ़ है ।

पहला माबीना

आओ और सिमटकर बैठें ।

नौजवान अंधी औरत

लेकिन क़दमों की आवाज़ की तरफ़ कान लगाओ ।

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

ख़ुदा के लिए एक लमहा चुप हो जाओ ।

नौजवान अंधी औरत

क़रीब होती जाती है । हाँ, क़रीब होती जाती है । सुनो !
(दफ़अतन् पगली औरत का बच्चा अँधेरे में ज़ोर से र
लगता है ।)

सबसे बुढ़ा माबीना

बच्चा रो रहा है !

औरत

वह देख रहा है, देख -
है । (वह बच्चे को
थामती है जिधर से आ

है। दूसरी औरतें मुतफ़क्किरर[१] अंदाज़ से उसके साथ चलती हैं और उसे घेर लेती हैं।) मैं इस आवाज़ की तरफ़ जाती हूं।

सबसे बुड्ढा नाबीना

होशियार रहना।

नौजवान अंधी औरत

उफ़! कितनी ज़ोर से रोता है, क्या है! मत रो बेटे! डरो मत! डरने की कोई बात नहीं है, हम सब तुम्हारे पास हैं। तुम क्या देख रहे हो? डरो मत! इस तरह मत रोओ! तुम क्या देखते हो? हमसे बतलाओ, आख़िर यह क्या चीज़ है?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

क़दमों की आवाज़ क़रीब आती जाती है, सुनो ग़ौर से सुनो!

सबसे बुड्ढा नाबीना

मुझे सूखी पत्तियों में किसी के कपड़ों की सरसराहट सुनायी देती है।

छठवां नाबीना

क्या कोई औरत है!

सबसे बुड्ढा नाबीना

सिर्फ़ आदमियों की आवाज़ है।

पहला नाबीना

शायद समुंदर सूखी पत्तियों पर बह रहा है?

---

१ चिन्तित

पहला नाबीना

उफ़ उफ़ ! यह मेरे हाथों पर इतनी ठंडी कौन-सी चीज़ गिर रही है !

छठवाँ नाबीना

बर्फ़ है ।

पहला नाबीना

आओ और सिमटकर बैठें ।

नौजवान अंधी औरत

लेकिन क़दमों की आवाज़ की तरफ़ कान लगाओ ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

खुदा के लिए एक लमहा चुप हो जाओ ।

नौजवान अंधी औरत

क़रीब होती जाती है । हाँ क़रीब होती जाती है । सुनो !

(दफ़अतन् पगली औरत का बच्चा अँधेरे में ज़ोर से रोने लगता है ।)

सबसे बुड्ढा नाबीना

बच्चा रो रहा है !

नौजवान अंधी औरत

वह देख रहा है, देख रहा है ! तब ही इतनी ज़ोर से रोता है । (वह बच्चे को अपनी गोद में ले लेती है और उस तरफ़ चलती है जिधर से क़दमों की आवाज़ आती हुई मालूम होती

है। दूसरी औरतें मुतफ़क्किरा¹ अंदाज़ से उसके साथ चलती हैं और उसे घेर लेती हैं।) मैं इस आवाज़ की तरफ़ जाती हूँ।

सबसे बुड्ढा माबोना

होशियार रहना।

नौजवान अंधी औरत

उफ़! कितनी ज़ोर से रोता है, क्या है! मत रो बेटे! डरो मत! डरने की कोई बात नहीं है, हम सब तुम्हारे पास हैं। तुम क्या देख रहे हो? डरो मत! इस तरह मत रोओ! तुम क्या देखते हो? हमसे बतलाओ, आख़िर यह क्या चीज़ है?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

क़दमों की आवाज़ क़रीब आती जाती है, सुनो, ग़ौर से सुनो!

सबसे बुड्ढा माबोना

मुझे सूखी पत्तियों में किसी के कपड़ों की सरसराहट सुनायी देती है।

छठवाँ माबोना

क्या कोई औरत है!

सबसे बुड्ढा माबोना

सिर्फ़ आदमियों की आवाज़ है।

पहला माबोना

शायद समुंदर सूखी पत्तियों पर बह रहा है?

---
¹ चिन्तित

नौजवान अंधी औरत

नहीं नहीं, क़दमों की आवाज़ है, क़दमों की आवाज़ है।

सबसे बूढ़ी अंधी औरत

हमें अभी मालूम हुआ जाता है सूखी पत्तियों की तरफ़ कान लगाये रहो।

नौजवान अंधी औरत

सुन रही हूँ सुन रही हूँ! बिलकुल पास! सुनो सुनो! बच्चे, तुम क्या देख रहे हो? तुम क्या देख रहे हो?

सबसे बूढ़ी अंधी औरत

वह किस तरफ़ ताक रहा है?

नौजवान अंधी औरत

वह क़दमों की आवाज़ हो की तरफ़ मुँह किये हुए है। देखो, देखो जब मैं उसका मुँह फेर देती हूँ वह फिर उसी तरफ़ ताकने लगता है। वह देख रहा है हाँ देख रहा है! वह कोई अजीबो-ग़रीब चीज़ देख रहा है।

सबसे बूढ़ी अंधी औरत

(आगे बढ़कर) उस हमसे ऊपर उठा दो ताकि खूब देख सके।

नौजवान अंधी औरत

हट जाओ (वह बच्चे को अंधों की जमात से ऊपर उठाती है) क़दमों की आवाज़ बिलकुल हमारे सामने आकर रुक गयी है—

सबसे बूढ़ा नाबीना

हाँ वह बिलकुल हमारे सामने आ गयी, ठीक सामने।

नौजवान अंधी औरत

तुम कौन हो ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

हमारे ऊपर रहम करो !

(खामोशी)

(सन्नाटा है । बच्चा गला फाड़-फाड़कर रोने लगता है ।)

●

मौजवान अंधी औरत

नहीं नहीं, क़दमों की आवाज़ है, क़दमों की आवाज़ है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

हमें अभी मालूम हुआ जाता है, सूखी पत्तियों की तरफ़ लगाये रहो।

मौजवान अंधी औरत

सुन रही हूँ सुन रही हूँ। बिलकुल पास! सुनो सुनो! तुम क्या देख रहे हो? तुम क्या देख रहे हो?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

वह किस तरफ़ ताक रहा है?

मौजवान अंधी औरत

वह क़दमों की आवाज़ ही की तरफ़ मुँह किये हुए है। देखो, जब मैं उसका मुँह फेर देती हूँ वह फिर उसी तरफ़ ताकने लगता है। वह देख रहा है, हाँ देख रहा है! वह कोई अजीब ग़रीब चीज़ देख रहा है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

(आगे बढ़कर) उसे हमसे ऊपर उठा दो ताकि खूब देख सके।

मौजवान अंधी औरत

हट जाओ (वह बच्चे को अंधा की जमात से ऊपर उठाती है) क़दमों की आवाज़ बिलकुल हमारे सामने आकर रुक गयी है—

सबसे बुड्ढा आदमी

हाँ वह बिलकुल हमारे सामने आ गयी, ठीक सामने।

नौजवान अंधी औरत

तुम कौन हो ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

हमारे ऊपर रहम करो !

(खामोश)

(सन्नाटा है । बच्चा गला फाड़-फाड़कर रोने लगता है ।)

●